नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पर्यटन को प्रदेश की तरक्की का इंजन बनाना होगा

मध्य प्रदेश सरकार अपना बजट 18 फरवरी को प्रस्तुत करने वाली है. यह बजट केवल आय-व्यय का लेखा-जोखा नहीं होगा, बल्कि यह तय करेगा कि 'हिंदुस्तान का दिल' आने वाले वर्षों में आर्थिक रूप से कितनी मजबूती से धड़कता है. वर्तमान में राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि, सेवा और उद्योग तीनों स्तंभों पर खड़ी है, लेकिन सेवा क्षेत्र में पर्यटन की भूमिका तेजी से निर्णायक होती जा रही है. राज्य सरकार का लक्ष्य पर्यटन का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में योगदान 5 प्रतिशत तक ले जाना है. यह लक्ष्य महत्वाकांक्षी जरूर है, लेकिन असंभव नहीं.

पिछले कुछ वर्षों में मध्य प्रदेश ने बुनियादी ढांचे के विस्तार, एक्सप्रेस-वे, एयर कनेक्टिविटी और औद्योगिक कॉरिडोर के माध्यम से निवेश आकर्षित किया है. औद्योगिक विकास दर में सुधार और कृषि उत्पादन में स्थिरता ने राज्य को आर्थिक संतुलन दिया है. फिर भी ग्रामीण आय में वृद्धि, रोजगार सृजन और स्थानीय उद्यमिता को मजबूत करने की चुनौती बरकरार है. यहीं पर्यटन एक प्रभावी आर्थिक इंजन के रूप में सामने आता है. दरअसल,राज्य की विशेषता उसकी विविधता है. उज्जैन का महाकाल लोक और ओंकारेश्वर का एकात्म धाम धार्मिक आस्था के केंद्र बन चुके हैं. खजुराहो, सांची और भीमबेटका जैसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल वैश्विक पहचान दिलाते हैं. कान्हा, बांधवगढ़ और पेंच जैसे राष्ट्रीय उद्यान 'टाइगर स्टेट' की छवि को सुदृढ़ करते हैं. कूनो नेशनल पार्क में चीता परियोजना ने अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर नई संभावनाएं खोली हैं. यह विविधता केवल सांस्कृतिक गौरव नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष और परोक्ष रोजगार का स्रोत है.

आर्थिक दृष्टि से पर्यटन का सबसे बड़ा लाभ इसका बहुस्तरीय प्रभाव है. होटल, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय भोजन, गाइड सेवा और ग्रामीण होमस्टे,इन सभी क्षेत्रों में आय का प्रवाह बढ़ता है.तमाम आर्थिक विशेषज्ञ मानते हैं कि 10 लाख रुपये के निवेश पर लगभग 90 रोजगार सृजित किए जा सकते हैं. यदि इस बार के बजट में कौशल विकास और स्थानीय युवाओं के प्रशिक्षण पर विशेष प्रावधान किया जाता है, तो यह रोजगार वृद्धि को गति देगा. इससे पलायन में कमी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थिरता आएगी. बजट से अपेक्षा है कि पर्यटन स्थलों के बीच कनेक्टिविटी को प्राथमिकता दी जाए. हेली-टैक्सी सेवा, बेहतर सड़क नेटवर्क और क्षेत्रीय हवाई अड्डों का विस्तार निवेशकों और पर्यटकों दोनों को आकर्षित करेगा. डिजिटल पर्यटन भी समय की मांग है. ऐतिहासिक स्थलों का डिजिटल दस्तावेजीकरण, वर्चुअल टूर और एकीकृत ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफॉर्म राज्य को तकनीकी रूप से प्रतिस्पर्धी बनाएंगे. इससे वैश्विक पर्यटकों तक सीधी पहुंच संभव होगी.

निजी निवेश को प्रोत्साहन भी निर्णायक रहेगा. फिल्म पर्यटन नीति, हेरिटेज होटल परियोजनाएं और टैक्स छूट जैसे कदम पूंजी प्रवाह बढ़ा सकते हैं. यदि सरकार पारदर्शी नीतिगत ढांचा और त्वरित अनुमति प्रणाली सुनिश्चित करे, तो निवेश का माहौल और मजबूत होगा. साथ ही, इको-टूरिज्म और सस्टेनेबल विकास को प्राथमिकता देना आवश्यक है, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन बना रहे.

इसमें कोई शक नहीं कि प्रदेश की आर्थिक स्थिति मजबूती की ओर बढ़ रही है, लेकिन उच्च विकास दर बनाए रखने के लिए सेवा क्षेत्र को और गति देनी होगी. पर्यटन वो क्षेत्र है, जो सांस्कृतिक विरासत को आर्थिक संपदा में बदल सकता है. इस बार का बजट यदि दूरदृष्टि और व्यावहारिकता के संतुलन के साथ पर्यटन को प्राथमिकता देता है, तो यह केवल आय बढ़ाने का माध्यम नहीं होगा, बल्कि आत्मनिर्भर और समावेशी विकास की दिशा में ठोस कदम साबित होगा. मध्य प्रदेश सचमुच तब 'हिंदुस्तान का दिल' ही नहीं, उसकी आर्थिक धड़कन भी बन सकता है.

संसद की सुरक्षा पर सवाल कितना उचित

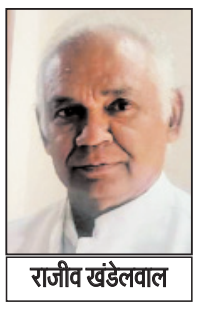

राजीव खंडेलवाल

> लगभग साढ़े छः वर्ष से अधिक समय से वर्ष 2019 से लोकसभा के उपाध्यक्ष का पद रिक्त है. यह भी स्वतंत्र भारत का लोकतंत्र के माथे पर बिंदी लगाने वाला रिकॉर्ड है? कारण शायद उपाध्यक्ष के पद पर विपक्ष के सांसद के निर्वाचन की परिपाटी का होना रहा है. यह विषय आज महत्वपूर्ण इसलिए हो गया क्योंकि अध्यक्ष के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव अभी लोकसभा में प्रस्तुत किया गया है, और चर्चा हेतु स्वीकार हो जाने पर आगे की कार्रवाई डिप्टी स्पीकर करता है.

भारत केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि सहस्राब्दियों की सभ्यता, संस्कृति और संघर्षों का जीवंत इतिहास है. जो प्राचीन सभ्यता राजनीतिक लोकतंत्र का अद्वितीय संगम है. हमारी परम्पराएँ, लोकतांत्रिक संस्थाएँ और सांस्कृतिक विरासत विश्व के लिए प्रेरणा रही हैं. किन्तु विडम्बना देखिए. 'न्यू इंडिया' गढ़ने की होड़ में क्या हम नवाचार के साथ-साथ संस्थागत परंपराओं और संतुलन की रक्षा कर पा रहे हैं? या कहीं हम ऐसा इतिहास तो नहीं लिख रहे, जो भविष्य में 'बदनुमा अध्याय' बनकर याद किया जाए? दुर्भाग्य वश वर्तमान समय में देश ''अशर्फियां लुटे और कोयलों पर मुहर'' लगाने वाली नकारात्मक उपलब्धियां की ओर बढ़ रहा है. संसद में घटी ताजा घटनाक्रम को ही ले ले, जिसने एक नए बदनुमा इतिहास (रिकॉर्ड) बना दिया.

'लोकतंत्र का मंदिर' कही जाने वाली सर्वाधिक सुरक्षित जगह ''संसद'' में भी यदि देश के सर्वाधिक शक्तिशाली, मजबूत, लोकप्रिय प्रधानमंत्री की सुरक्षा पर ही प्रश्नचिह्न लग जाए, यह अप्रिय स्थिति है. लोकसभा अध्यक्ष जो संसद (हाउस) का संरक्षक, अभिभावक, कस्टोडियन होता है, जुड़ा हो, तब इसकी जानकारी सदन के माध्यम से देश को तुरंत ही दी जानी चाहिए थी.

विपक्ष द्वारा लगातार व्यवधान और सत्ता पक्ष की रणनीति, दोनों ने मिलकर ऐसा परिदृश्य रचा, जिसने 'दो पाटों में पिसती जनता' की तरह लोकतंत्र को असहज कर दिया. वर्ष 2004 का प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का लोकसभा में न बोलने का उदाहरण यहाँ सटीक नहीं बैठता है. क्योंकि तब प्रक्रिया अलग थी और भाषण औपचारिक रूप से प्रस्तुत ''(टेबल)'' कर दिया गया था. सदन में हंगामा हमेशा से होते आए हैं. हंगामे का रूप विरोध पक्ष अपने वेळ में तथा सत्ता पक्ष अपने वेल में या अधिकतम अध्यक्ष की वेल में. लेकिन लोकसभा में अभूतपूर्व हुआ है कि विरोध पक्ष के सांसद बैनर व प्लेकार्डस के साथ ट्रेजरी बेंच को क्रॉस कर विरोध करने प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंच गए.

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी कहां पीछे रहने वाली है. अपने ही राज्य के मुद्दे पर स्वयं द्वारा दायर याचिका पर उच्चतम न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में उपस्थित होकर बहस करना अभूतपूर्व घटना है. यह 'राजनीति और विधि' की सीमाओं को एक साथ लांघने जैसा है. सही कहा है, ''बाज के बच्चे मुंडेरों पर नहीं उड़ा करते''.

मतदाता सूची (इलेक्ट्रोल रोल) के विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया भी स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार हो रही है. ''कुएं में बास डाल कर'' ढूढ़ा जा रहा है. तथापि यह दावा कि बिहार में वर्ष 2003 में विशेष गहन पुनरीक्षण हुआ था, गलत है. तत्समय ''गहन पुनरीक्षण'' हुआ था, ''विशेष गहन पुनरीक्षण'' नहीं. देश के अनेक आईकॉन भारत रत्न, पद्म पुरस्कार विजेता प्रतिष्ठित नागरिकों तक को मतदाता सूची में अपना नाम बनाए रखने के लिए दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए सूचना पत्र जारी किए गए. अब ये आईकॉन ''तकदीर का अफ़साना जाकर किसे सुनाएं''? यह तो एक बानगी मात्र है. सुधार की आड़ में यदि अव्यवस्था पनपे, तो यह 'ऊँट के मुँह में जीरा' जैसा उपाय हो सकता है.

देश के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ लोकसभा में अप्रत्याशित घटना घट सकती थी? लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ''जीभ जली और मजा भी नहीं आया'' के उक्त कथन को तर्क के रूप में एक छण के लिए एक प्रतिशत भी सही मान लिया जाए, तो इस घोषणा के बाद निम्न कहे-अनकहे अनुत्तरित प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठते हैं. **(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, नगर सुधार न्यास).**

की संसद में घोषणा कि प्रधानमंत्री के साथ 'अप्रत्याशित घटना' घट सकती थी, न केवल ''चौंकाने'' वाला है, बल्कि अनेक सवाल भी खड़े करता है?

क्या यह एक कल्पना मात्र होकर पश्चिवती विचार (आफ्टर थॉट) भी हो सकता है? खासकर तब जब शाम 5:00 समय निश्चित होने के बाद लोकसभा में प्रधानमंत्री के न आने पर उक्त घोषणा एक सेनापति के रूप में सुरक्षा कवच के रूप में स्पीकर द्वारा तुरंत उसी समय न कर दूसरे दिन तब की, जब सोशल मीडिया प्रधानमंत्री के लोकसभा न आने पर आलोचनाओं से भर गया. मामला जब देश के प्रधानमंत्री के जीवन या पद की गरिमा से

मालवा- निमाड़ की डायरी

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने अर्चना चिटनीस का मान रखा

संजय व्यास

बुरहानपुर में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव अपने कार्यकाल के पहले सरकारी आयोजन में पहुंचे और क्षेत्रवासियों को खुश कर गए. बुरहानपुर में मुख्यमंत्री ने पूर्व मंत्री व विधायक अर्चना चिटनीस का सम्मान रखा व उनसे किए वादे के अनुसार सौगातों की बारिश करते हुए 700 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण तथा भूमिपूजन किया.

इसके साथ ही क्षेत्रवासियों में दीदी के रूप में लोकप्रिय अर्चना चिटनिस के अनुरोध पर बुरहानपुर में सौगातों की बारिश के चलते मिनी एयरपोर्ट, शाहपुर नगर परिषद को नगर पालिका बनाने की घोषणा, तासी मेगा रिचार्ज के शीघ्र क्रियान्वयन का वादा , केला, कपास,

उद्यानिकी फसल को बीमा एवं इनपर आधारित उद्योगों की स्थापना, इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव का मार्च में आयोजन, 28 वर्षों से बंद पड़ी बहादरपुर सुत मिल श्रमिकों को शेष भुगतान की घोषणा सहित जो मांगा वह दिया.

ऐतिहासिक नगर बुरहानपुर के बाशिंदे वर्षों से पुरातत्वीय पहचान से आगे विकसीत शहर की श्रेणी में आने की बाट जोह रहे हैं. चिटनीस के प्रयत्नों व मुख्यमंत्री यादव की घोषणाओं से उन्हें अब अपने सपने पूरे होने में उम्मीद की किरण नजर आ रही है. कार्यक्रम में चिटनीस ने मुख्यमंत्री से बुरहानपुर का नाम बदलकर ब्रह्मपुर करने का भी आग्रह किया. अपने कार्यकाल में 70 जगहों के नाम बदलने का ऐलान कर चुके मुख्यमंत्री यादव ने फिलहाल ऐसी कोई घोषणा नहीं की, पर आगे देखते हैं कि वे चिटनीस की यह इच्छा भी पूरी करते हैं या बात आई गई.

दो मोर्चों पर जूझ रही कांग्रेस

बुरहानपुर कांग्रेस को इन दिनों दो मोर्चों पर लडना पड़ रहा है. एक भाजपाई सत्ता के खिलाफ तो दूसरा अपनों से. जिले की कांग्रेस इस समय विपक्ष से ज्यादा अपनी ही अंदरूनी खींचतान से जूझती नजर आ रही है. गुटों में बंटी पार्टी अब खुलकर आमने-सामने दिखने लगी है. हालात यह है कि एसआईआर में नाम कटने के विरोध में भोपाल से आए कांग्रेस विधायक और अल्पसंख्यक चेहरा आरिफ मसूद जब कार्यकर्ताओं के साथ ज्ञापन देने कलेक्ट्रेट पहुंचे तो शहर और जिला कांग्रेस के कई नेता उनसे दूरी बनाते दिखाई दिए.

गुटबाजी के कारण यहां कई वरिष्ठ नेता अलग थलग पड़ गए हैं. कांग्रेस के अलग-अलग गुट के नेता अपने-अपने गुटीय आधार जन समस्याओं पर शक्ति प्रदर्शन दिखाते हुए आंदोलन करने में व्यस्त हैं. जिलाध्यक्ष रिंकू टांक का अपना ओहदा और अपना अलग गुट है. पूर्व विधायक ठाकुर सुरेंद्र सिंह की सबसे पटरी बैठती नहीं है. अल्पसंख्यक नेता अपने को अल्पसंख्यक नेता बताने और दिखाने में लगे रहते हैं. वही पूर्व जिलाध्यक्ष एवं अरुण यादव समर्थक अजयसिंह रघुवंशी का अपना अलग जनाधार और वर्चस्व होने से निगम क्षेत्र में अपना बड़ा वजूद रखते हैं. इससे लगता है कि शक्ति के केंद्र इतने बंटे हुए हैं, आम जन समझ नहीं पाता कि आखिर सर्वमान्य नेता कोई है या नहीं.

दो दिन की खुशी

झाबुआ जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश रांका को अपनी जम्बो कार्यकारिणी बनाना भारी पड़ गया. सबको खुश करने की नीयत से उन्होंने लम्बी जिला कार्यकारिणी के लिए नामों की अनुशंसा की थी. हाल ही में उनकी अनुशंसा पर प्रदेश कांग्रेस ने जिला कार्यकारिणी को हरी झंडी दी थी. नामों की घोषणा के बाद कार्य कारिणी के पदाधिकारी-सदस्य जश्न भी नहीं मना पाए थे कि एआईसीसी का कार्यकारिणी भंग का फरमान आ गया. एआईसीसी ने साफ निर्देश दिए हैं कि जिला कार्यकारिणी में छोटे जिलों में 31 और बड़े जिलों में 51 से ज्यादा सदस्य नहीं होने चाहिए. उल्लेखनीय है कि यह निर्देश जारी होने से ठीक दो दिन पहले जिला कार्यकारिणी की घोषणा की गई थी. उस दौरान बड़े पैमाने पर पदों का बंटवारा किया गया था. अब देखते हैं कि संगठन में संतुलन और अनुशासन बनाए रखने के लिए निर्धारित मानकों का पालन करते हुए ही नई जिला कार्यकारिणी के होने वाले गठन में किसे खुशी नसीब होती है और किसे मायूसी.

महिला वोटों के लिए सरकारी दरियादिली

समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के नाम पर वोटों की खरीदारी करने में कोई पार्टी पीछे नहीं है. चुनाव सामने देखकर महिलाओं और गरीबों के प्रति नेताओं के मन में सहानुभूति का सैलाब फूट पड़ता है. देश के 12 राज्य 12.8 करोड़ महिलाओं को प्रतिवर्ष 1.9 लाख करोड़ रुपये कैश ट्रांसफर कर रहे हैं. इस रकम से कुछ ऐसी योजनाएं शुरू की जा सकती हैं जो महिलाओं या बेरोजगार युवाओं को रोजगार का अवसर दें. बिना कुछ किए मुफ्त में नकद रकम देने से वह विकास की दृष्टि से काम नहीं आती, बल्कि उपभोग में खर्च हो जाती है. यदि देना ही है तो उसे बॉन्ड,

विकासपत्र या सेविंग्स सर्टिफिकेट के रूप में दिया जाए ताकि हितग्राही भी उसे अपनी बचत मानकर खुश रहे और सरकार भी उस धनराशि का विकास योजनाओं में उपयोग कर सके. इस समय स्थिति ऐसी है कि नकदी ट्रांसफर करने वाले राज्य 3 वर्षों में 6 गुना बढ़ गए. भारतीय रिजर्व बैंक ने 2024 में चेतावनी दी थी कि सब्सिडी या कैश ट्रांसफर का बढ़ता खर्च राज्यों की वित्तीय स्थिति पर दबाव डाल सकता है. इसकी वजह से अन्य उत्पादक खर्चों के लिए उपलब्ध वित्तीय गुंजाइश भी कम हो सकती है. वित्त वर्ष 2022-23 में केवल 2 राज्यों में ऐसी योजनाएं थीं लेकिन 2025-26 तक यह 12 राज्यों ने अपना लीं. ऐसी योजना सुरू करने वाले राज्यों में से 6 ने वित्त वर्ष 2025-26 में राजस्व घाटे का अनुमान लगाया है. आर्थिक सर्वेक्षण में भी यह ट्रेंड लगातार बढ़ने पर चिंता व्यक्त की गई है. मध्यप्रदेश में लाडली बहना, महाराष्ट्र में लाडकी बहीण, कर्नाटक में गृहलक्ष्मी, हरियाणा में लाडो, ओडिशा में सुभद्रा, झारखंड में मईया सम्मान, छत्तीसगढ़ में महतारी वंदन, तेलंगाना में महालक्ष्मी, हिमाचल प्रदेश में इंदिरा सम्मान, असम में ओरनोदोई नाम से महिलाओं के खाते में सरकारी रकम दी जा रही है. बंगाल व तमिलनाडु में इस वर्ष विधानसभा चुनाव हैं. ममता बनर्जी सरकार ने महिलाओं को प्रतिमाह 1700 रुपये देने की लक्ष्मी भंडार योजना शुरू कर दी है. तमिलनाडु की डीएमके सरकार ने 1,000 रुपये हर माह देने वाली उर्मई थोगई योजना शुरू कर दी है. इसके पीछे वोटों की राजनीति काम करती है. बिहार चुनाव के पहले मुख्यमंत्री नीतीशकुमार ने हर महिला के खाते में 10,000 रुपये की एकमुश्त रकम जमा कर अपनी पार्टी जदयू की जीत सुनिश्चित कर ली थी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

टीपू की तारीफ करते सपकाल देवाभाऊ हुए गुस्से से लाल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, वर्तमान काल को न देखते हुए महाराष्ट्र कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल सीधे भूतकाल में चले गए. उन्होंने हैदरअली के बेटे टीपू सुलतान की तारीफ कर दी जिन्हें शेर-ए-मैसूर कहा जाता था. टीपू ने अपने शौर्य से अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे. उन्होंने युद्ध में रॉकेट का इस्तेमाल किया था जिसे फ्रांसीसी कारीगरों ने बनाया था. कर्नाटक के इतिहास में श्रीरंगपट्टनम का युद्ध मशहूर है.'

हमने कहा, 'छत्रपति शिवाजी महाराज के महाराष्ट्र में रहकर टीपू सुलतान का गुणगान करने वाले सपकाल को मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने आड़े हाथ लेते हुए कहा कि सपकाल को शर्म आनी चाहिए. छत्रपति शिवाजी महाराज ने मुगलों के खिलाफ जंग कर स्वराज्य की स्थापना की थी जबकि टीपू सुलतान ने हजारों हिंदुओं को मौत के घाट उतरवा दिया. ऐसे हिंदू विरोधी अत्याचारी की तारीफ हम बर्दाश्त नहीं करेंगे. सपकाल को अपने बयान के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, सपकाल ने मुस्लिम वोट बैंक का ध्यान रखते हुए टीपू की तारीफ के पुल बांध दिए. इस तरह की राजनीति हर पार्टी में होती है. इंदिरा गांधी की चापलूसी करते हुए तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष देवकांत बरुआ ने कहा था- इंडिया इज इंदिरा एंड इंदिरा इज इंडिया, इसी तरह कुछ समय पूर्व ओडिशा के बीजेपी सांसद प्रदीप पुरोहित ने दावा किया था कि प्रधानमंत्री मोदी पूर्वजन्म में छत्रपति शिवाजी महाराज थे. यह रहस्य उन्हें गंधमर्दन पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले संत गिरिजा बाबा ने बताया था.'

हमने कहा, 'निशानेबाज यदि बीजेपी सांसद ने मोदी का महिमामंडन किया तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है. स्वयं मोदी को भी अपने दिव्य स्वरूप की अनुभूति हुई थी तभी तो उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व कहा था कि मुझे लगता है कि मैं बॉयोलॉजिकल नहीं हूं. उन्होंने मां गंगा से गहरा नाता जोड़ रखा है. बीजेपी के भक्तजन चाहें तो भीष्म पितामह के समान मोदी को भी गंगापुत्र कह सकते हैं. इसी तरह कुछ माह पहले पूर्व कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष नाना पटोले ने अपनी दिव्य दृष्टि से टीशर्ट और जीन्स पहनने वाले राहुल गांधी में नीलवर्ण और पीतांबरधारी भगवान राम के दर्शन किए थे. हमारी विभिन्न पार्टियों के नेता कब क्या ज्ञान बाटेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12174 -डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1.अजीर्ण के कारण होने वाला पेट दर्द 4. पति, प्रेमी 7. रहस्य, भेद, गुप्त बात (उर्दू) 8. घर, मकान, रहना (सं.) 10. सीमा, मर्यादा 11. कहार, सरदार, श्रेष्ठ 13. क्षतिपूर्ति, हानि के बदले में दिया जाने वाला धन 15. एक प्रकार का लडाकू वायुयान जिससे शत्रु पर बम गिराए जाते हैं 18. दली हुई अरहर-मूंग आदि 19. महा, अति, बहुत 21. तंदूर में पकाई जाने वाली एक तरह की मोटी खमीरी रोटी 22. लज्जा, शर्म, हया 24. मित्र, प्रेमी 26. मच्छर आदि से बचने के लिए पलंग के चारों ओर लगाया गया जालीदार कपड़ा 28. तन्मयता 29. अभिप्राय, आशय

ऊपर से नीचे

1. विश्राम, आरोग्य, सुख, चैन 2. धार्मिक संप्रदाय, मत, पंथ, धर्म (उर्दू) 3. तीतर की जाति का एक छोटा पक्षी 5. गाने या बोलने का ढंग, स्वर 6. शिव (सं.) 9. खुशी से 12. एक प्रकार का धान 14. धन, संपत्ति 16. घुमाव, फिराव, फेरा 17. हरे-भरे पेड़-पौधों का विस्तार 20. समुद्रमंथन के समय निकला हुआ भयंकर विष 23. भूमि नापने की 60 गज लंबी जंजीर 25. जंगल, रण, युद्ध 26. मेरा (सं.) 27. किसी पदार्थ का सार भाग, सत्य, सच

Solution 12173

वा	स	व्य	व	स्था		का	श
स	र	स		व	री	य	ता
ना		न		र		दा	नी
	पा		मि		वा		क
अ	र्थ	शा	स्त्र		द		
मि		र		छ	वि	गृ	ह
ता	ज	दा	र		वा	ह	क
भ	य			प	द	स्थ	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता प्राप्त होगी, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा, वर्ष के मध्य में सत्ता सुख प्राप्त होगा,स्थाई लाभ का योग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, अत्याधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग से मतभेद हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम से सफलता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मतभेद हो सकता हे, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, गौरवर्ण का लंबे कद का दुबला पतला एवं बुद्धिमान और जिद्दी-मनमौजी होगा, किसी की नहीं सुनेगा, मित्रों की संख्या अधिक होगी, इंजीनियरिंग में तरक्की करेगा, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझने की उम्मीद है, अधिनस्थ लोगों का सहयोग मिलेगा, बेरोजगारों को प्रयास करने पर रोजगार मिलेगा.

वृषभ- कारोबारी विस्तार की संभावना, आर्थिक कार्यो में सफलता मिलेगी, कुटुम्बियों का सहयोग प्राप्त होगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

मिथुन- सामाजिक कार्यों में शामिल होकर मन को खुशी मिलेगी, भावनात्मक संबंध बढ़ेंगे, अधिक वाकपटुता से काम बिगड़ सकता है, वार्तालाप संयमित रखें.

कर्क- कार्यक्षेत्र में सहयोग लाभदायी रहेगा, यात्रा मे उठाईगीरों से सावधान रहें, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त हो सकता है.

सिंह- अधिकारियों का मेलजोल लाभदायक रहेगा, इच्छित कार्यों की रूपरेखा बनेगी, सफलता प्राप्त होगी, मन में हर्ष और उत्साह बना रहेगा.

कन्या- मन की बात मित्रों से कह दें, तनाव कम होगा, पारिवारिक यात्रा हो सकती है, नौकरी में व्यस्तता रहेगी, तनाव की स्थिति से बचें.

तुला- नये कार्य के लिये जरूरी धन की व्यवस्था कर लेंगे, मानसिक प्रसन्नता होगी, व्यापार में सफलता प्राप्त होगी, परेशानियों का निवारण होगा.

वृश्चिक- घरेलू आयोजन में भाग लेंगे, मातृपक्ष से विशिष्टजनों का समाचार मिलेगा, मतभेदों से बचने का प्रयास करें, मार्गदर्शन मिलेगा.

धनु- मित्रों से किया गया वायदा निभाने में मुश्किल होगी, व्यापार में सफलता मिलेगी, महत्वपूर्ण समाचारों की योजना बनेगी, जरूरी विचार विमर्श होगा.

मकर- रूखे व्यवहार से परिचितों को नाराज कर सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, यश मिलेगा. मान सम्मान की प्राप्ति होगी. धन लाभ होगा.

कुम्भ- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, अतिथि आगमन होगा, इष्ट मित्रों एवं परिजनों के सहयोग से कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी.

मीन- विपरीत माहौल में खुद के लिये अनुकूला बना लेंगे, संतान संबंधी कार्यों में व्यस्तता रहेगी, नवीन कार्यो के प्रति मन का झुकाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

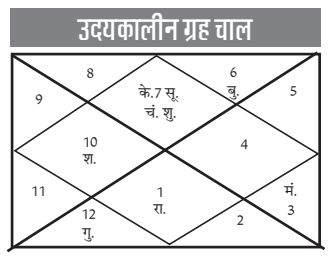

पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण अमावस्या भौमवासरे शाम 5/24, धनिष्ठा नक्षत्रे रात 9/25, परिघ योगे रात 12/53, नाग करणे सू.उ. 6/24, सू.अ. 5/36, चन्द्रचार मकर दिन 9/3 से कुम्भ, पर्व- स्नानदान श्राद्ध अमावस्या, भौमवती अमावस्या, शु.रा.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़-खांड, शक्कर, नारियल, छुहारा, बादाम, मीन के भाव में तेजी होगी, अलसी, अरंडी, सींगदाना, में नरमी रहेगी, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन, में समता रहेगी, भाग्यांक

SUDOKU 7306

4					1	9		
						8	5	
			7	3				
			3				4	7
9								2
8	5				6			
				5	8			
	7	4						
		6	2					5

g प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. g पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. g पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7305

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1